© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 11 | October – December 2017

सिंधु घाटी सभ्यता - विशेषताएँ एवं पतन के कारण : एक विवेचना

Vishal
tejvishal@rediffmail.com

सार

भारत का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ होता है जिसे हम हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता लगभग 2500 ईस्वी पूर्व दक्षिण एशिया के पश्चिमी भाग मैं फैली हुई थी,जो कि वर्तमान में पाकिस्तान तथा पश्चिमी भारत के नाम से जाना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता मिस्र, मेसोपोटामिया,भारत और चीन की चार सबसे बड़ी प्राचीन नगरीय सभ्यताओं से भी अधिक उन्नत थी। 1920 में, भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा किये गए सिंधु घाटी के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों से हड़प्पा तथा मोहनजोदडो जैसे दो प्राचीन नगरों की खोज हुई। भारतीय पुरातत्त्व विभाग के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल जॉन मार्शल ने सन 1924 में सिंधु घाटी में एक नई सभ्यता की खोज की घोषणा की।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

मुख्य शब्द : प्राचीन, नगरीय, सभ्यताओं, भारतीय इत्यादि।

प्रस्तावना

सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, इसका अनुमानित समय काल 2500 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व है। सिन्धु घाटी सभ्यता कांस्ययुगीन (ब्रोंज ऐज) थी। इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। यह सभ्यता नगरीय थी। इस सभ्यता का विस्तार भारत के पश्चिम व उत्तर पश्चिम तथा पाकिस्तान के पंजाब व सिंध प्रांत में मौजूद थी। 1921 में सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थान पर खनन के इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। 1826 ईसवी में चार्ल्स मेंसर्न ने हड़प्पा में किसी प्राचीन सभ्यता के होने का उल्लेख किया। वर्ष 1921 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष जॉन मार्शल के निर्देश पर हड़प्पा स्थान के बारे में पता चला। हड़प्पा सभ्यता में सर्वाधिक साक्ष्य जीवाश्म के रूप में मोहनजोदड़ो से मिले हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता में 4 प्रमुख प्रजातियों भू-मध्यसागरीय, प्रोटो-ऑस्ट्रेलियाड, मोंगोलोइड व अल्पाइन के निवास के संकेत मिलते हैं। इनमे भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोग सर्वाधिक हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर उत्तर प्रदेश में था। इस सभ्यता का उत्तरी छोर जम्मू के मांडा में जबकि दक्षिणी छोर महाराष्ट्र के दैमाबाद में स्थित था। इस सभ्यता का पूर्वी छोर उत्तर प्रदेश के आलमगीरपुर व पश्चिमी छोर बलूचिस्तान के मकरान तट पर स्थित है। यह

एक त्रिभुजाकार क्षेत्र में फैली हुई थी, यह सभ्यता लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई थी। यह क्षेत्र मेसोपोटामिया और मिस्र से भी बड़ा है।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएं

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताओं में सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, धार्मिक जीवन, कला और संस्कृति, राजनैतिक और सामाजिक संगठन आदि का अध्ययन करते हैं।

1. राजनैतिक संगठन -

सिंधु घाटी सभ्यता लगभग 600 वर्षों तक निरन्तर कायम रही। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ कोई न कोई उच्च केन्द्रीय राजनीतिक संगठन रहा होगा। dr. R. S. शर्मा के अनुसार सिंधु सभ्यता के लोगों ने सबसे अधिक ध्यान वाणिज्य और व्यापार की ओर दिया। अतः हड़प्पा सभ्यता का शासन सम्भवतः "वणिक वर्ग" के हाथों में था। कुछ अन्य विद्वान जैसे- हंटर के अनुसार यहाँ की शासन व्यवस्था जनतान्त्रिक पद्धति से चलती थी।

2. सामाजिक संगठन -

सैन्धव समाज तीन वर्गों में विभाजित था। विशिष्ट वर्ग, खुशहाल मध्यम वर्ग, अपेक्षाकृत कमजोर वर्ग। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि दुर्ग में निवास करने वाले लोग पुरोहित वर्ग के थे। नगर क्षेत्र में व्यापारी, अधिकारी, सैनिक एवं शिल्पी रहते थे। जबकि नगर के निचले हिस्से में अपेक्षाकृत कमजोर वर्ग जैसे- कृषक, कुम्भकार, बढ़ई, नाविक, सोनार, जुलाहे तथा श्रमिक रहते थे। हड़प्पा सभ्यता में सम्भवतः दास प्रथा प्रचलित थी।

सिन्धु घाटी के निवासी खाने पीने, वस्त्र एवं आभूषणों के शौकीन थे। आभूषण सोने, चाँदी एवं माणिक्य के बनाये जाते थे। हाथी दांत तथा शंख का उपयोग अलंकरण तथा चूड़ियां बनाने के लिए किया जाता था। दर्पण ताँबे के बने थे जबकि कंघियाँ और सुइयाँ हाथी दांत की बनी हुई थीं। हड़प्पा से एक श्रृंगारदान मिला है तथा चन्हूदड़ो से एक अंजनशालिका तथा लिपिस्टिक प्राप्त हुई है। नौसारो से स्त्रियों की मांग में सिन्दूर लगाये जाने के साक्ष्य मिले हैं। हड़प्पा सभ्यता के लोग मनोरंजन के लिए पाँसे खेलना, शिकार तथा नृत्य आदि किया करते थे।

स्त्रियों की दशा -

सबसे अधिक नारी मृण्मूर्तियां मिलने के कारण सैन्धव समाज मातृसत्तात्मक माना जाता है। परन्तु लोथल से तीन युगल शवाधान तथा कालीबंगा से एक युगल शवाधान मिला है जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ सती प्रथा का प्रचलन था।

3. आर्थिक जीवन -

सिंधु सभ्यता का आर्थिक जीवन अत्यन्त विकसित अवस्था में था। आर्थिक जीवन के प्रमुख आधार कृषि, पशुपालन, शिल्प और व्यापार थे।

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन-

- सिंधु घाटी सभ्यता का लगभग 1800 ई.पू. में पतन हो गया था, परंतु उसके पतन के कारण अभी भी विवादित हैं।
- एक सिद्धांत यह कहता है कि इंडो -यूरोपियन जनजातियों जैसे- आर्यों ने सिंधु घाटी सभ्यता पर आक्रमण कर दिया तथा उसे हरा दिया ।
- सिंधु घटी सभ्यता के बाद की संस्कृतियों में ऐसे कई तत्त्व पाए गए जिनसे यह सिद्ध होता है कि यह सभ्यता आक्रमण के कारण एकदम विलुप्त नहीं हुई थी ।
- दूसरी तरफ से बहुत से पुरातत्त्वविद सिंधु घाटी सभ्यता के पतन का कारण प्रकृति जन्य मानते हैं।
- प्राकृतिक कारण भूगर्भीय और जलवायु संबंधी हो सकते हैं।
- यह भी कहा जाता है कि सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्र में अत्यधिक विवर्तिनिकी विक्षोभों की उत्पत्ति हुई जिसके कारण अत्यधिक मात्रा में भूकंपों की उत्पत्ति हुई।
- एक प्राकृतिक कारण वर्षण प्रतिमान का बदलाव भी हो सकता है।
- एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि नदियों द्वारा अपना मार्ग बदलने के कारण खाद्य उत्पादन क्षेत्रों में बाढ़आ गई हो ।
- इन प्राकृतिक आपदाओं को सिंधु घाटी सभ्यता के पतन का मंद गति से हुआ, परंतु निश्चित कारण माना गया है।

उपसंहार

सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है। जो मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में, जो आज तक उत्तर पूर्व अफगानिस्तान ,पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम और उत्तर भारत में फैली है। प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया की प्राचीन सभ्यता के

साथ, यह प्राचीन दुनिया की सभ्यताओं के तीन शुरुआती कालक्रमों में से एक थी, और इन तीन में से, सबसे व्यापक तथा सबसे चर्चित। सम्मानित पत्रिका नेचर में प्रकाशित शोध के अनुसार यह सभ्यता कम से कम 8000 वर्ष पुरानी है। यह हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जानी जाती है। इसका विकास सिंधु और घघ्घर/हकड़ा (प्राचीन सरस्वती) के किनारे हुआ। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, धोलावीरा और राखीगढ़ी इसके प्रमुख केन्द्र थे। 2019 में करीम साही वेंगी कोट को सिंधु घाटी सभ्यता के दो नए स्थान खोजे गए है। ब्रिटिश काल में हुई खुदाइयों के आधार पर पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकारों का अनुमान है कि यह अत्यंत विकसित सभ्यता थी और ये शहर अनेक बार बसे और उजड़े हैं। 7वीं शताब्दी में पहली बार जब लोगो ने पंजाब प्रांत में ईटो के लिए मिट्टी की खुदाई की तब उन्हें वहाँ से बनी बनाई इटे मिली जिसे लोगो ने भगवान का चमत्कार माना और उनका उपयोग घर बनाने में किया उसके बाद 1826 में चार्ल्स मैसेन ने पहली बार इस पुरानी सभ्यता को खोजा। कनिंघम ने 1856 में इस सभ्यता के बारे में सर्वेक्षण किया। 1856 में कराची से लाहौर के मध्य रेलवे लाइन के निर्माण के दौरान बर्टन बंधुओं द्वारा हड़प्पा स्थल की सूचना सरकार को दी। इसी क्रम में 1861 में एलेक्जेंडर कनिंघम के निर्देशन में भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की गयी। 1902 में लार्ड कर्जन द्वारा जॉन मार्शल को भारतीय पुरातात्विक विभाग का महानिदेशक बनाया गया। फ्लीट ने इस पुरानी सभ्यता के बारे में एक लेख लिखा। 1921 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा का उत्खनन किया। इस प्रकार इस सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता रखा गया व राखलदास बेनर्जी को मोहनजोदडो का खोजकर्ता माना गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

[1] तंत्रसमुच्चय: सम्पा. वी.ए. रामस्वामी शास्त्री, अनन्तशय संस्कृत ग्रन्थावली, ग्रन्थांक 151, 1945 ईतिलोय

[2] तैत्तिरीय संहिता: सतलवेकर स्वाध्याय मण्डल, पारडी, 1957

[3] दिव्यावदान: पी.एल. वैद्य, बौद्ध संस्कृत ग्रन्थमाला, नं. 20, मिथिला इन्स्टीट्यूट दरभंगा, 1959

[4] दीघनिकाय: हिन्दी अनुवाद, राहुल सांकृत्यायन-जगदीश कश्यप, महाबोधि सभा, सारनाथ, 1937

[5] नायाधम्मकहाओ: जिनागम ग्रन्थमाला: ग्रन्थांक 4, पंचम गणधर भगवत्सुधर्म-स्वामि-प्रणीत षष्ठ अंग, अनुवादकः पं. शोभाचन्द्र भारिल्ल, श्री आगम प्रकाश समिति, ब्यावर, 1981

[6] निरूक्त: हिन्दी व्याख्या पं. सीताराम शास्त्री, भाग 1-2, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2002

[7] प्रासादमण्डन: पं. भगवानदास जैन द्वारा उद्धृत, वास्तुसार प्रकरण हिन्दी भाषान्तर सहित

[8] बालचरितम्: विद्या भवन संस्कृत ग्रन्थमाला, वाराणसी, 1972